प्लासू–थितरोली क्षेत्र (जौनसार–बावर) में माता बल्याणी देवता एवं जौनसारी वंश पर मानवशास्त्रीय टिप्पणी

आधुनिक प्रशासनिक सीमाओं से परे जौनसारी पहचान की ऐतिहासिक निरंतरता

तैयारकर्ता:

नरेंद्र मोहन शर्मा

वर्ष: 2026

घोषणा

मैं, नरेंद्र मोहन शर्मा, यह घोषणा करता/करती हूँ कि यह मानवशास्त्रीय टिप्पणी पारिवारिक मौखिक परंपरा, दीर्घकालिक धार्मिक आस्थाओं, ग्राम स्तरीय सामाजिक-सांस्कृतिक प्रथाओं तथा उपलब्ध शैक्षणिक साहित्य के आधार पर तैयार की गई है।

यह दस्तावेज़ केवल शैक्षणिक, सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक संदर्भ हेतु प्रस्तुत किया गया है।

दिनांक:

हस्ताक्षर:

1. प्रस्तावना

यह मानवशास्त्रीय टिप्पणी जौनसार-बावर सांस्कृतिक क्षेत्र में माता बल्याणी देवता से पारंपरिक रूप से जुड़े एक जौनसारी वंश की ऐतिहासिक निरंतरता को अभिलेखित करती है।

इस अध्ययन का केंद्र ग्राम प्लासू (ग्राम पंचायत अणु) एवं ग्राम थितरोली हैं, जो वर्तमान में भिन्न-भिन्न प्रशासनिक राज्यों में स्थित हैं, परंतु ऐतिहासिक रूप से एक ही सांस्कृतिक एवं धार्मिक परिक्षेत्र का अंग रहे हैं।

इस दस्तावेज़ का उद्देश्य यह स्पष्ट करना है कि जौनसार-बावर क्षेत्र में जनजातीय पहचान, धार्मिक परंपरा एवं वंशागत निरंतरता आधुनिक प्रशासनिक सीमाओं से पूर्व की है और उनसे स्वतंत्र रूप से विकसित हुई है।

2. भौगोलिक एवं सांस्कृतिक परिवेश

ग्राम अणु (प्लासू) एवं थितरोली भौगोलिक रूप से निकटवर्ती हैं तथा पारंपरिक रूप से जौनसार-बावर के सांस्कृतिक प्रभाव क्षेत्र में स्थित रहे हैं।

यहाँ की भौगोलिक संरचना, बसावट का स्वरूप तथा जीवन-यापन की पद्धतियाँ जौनसारी समाज की विशिष्ट पहाड़ी संस्कृति को प्रतिबिंबित करती हैं।

ऐतिहासिक रूप से सामाजिक संबंध, भूमि उपयोग, धार्मिक अनुष्ठान एवं देवता परंपराएँ ग्राम या बाद में बनी राज्य सीमाओं से सीमित नहीं थीं।

3. प्रशासनिक सीमाओं का ऐतिहासिक संदर्भ

जिन कालखंडों में इस अध्ययन में वर्णित पूर्वज निवास करते थे तथा धार्मिक भूमिकाएँ स्थापित हुईं:

उस समय उत्तराखंड राज्य का अस्तित्व नहीं था।

वर्तमान स्वरूप में हिमाचल प्रदेश की प्रशासनिक सीमाएँ भी अस्तित्व में नहीं थीं।

यह क्षेत्र पूर्ववर्ती प्रशासनिक व्यवस्थाओं एवं पारंपरिक सामाजिक संरचनाओं के अंतर्गत एक सांस्कृतिक इकाई के रूप में कार्य करता था।

अतः वर्तमान प्रशासनिक सीमाएँ आधुनिक काल की निर्मित संरचनाएँ हैं, जिन्हें ऐतिहासिक जनजातीय पहचान निर्धारण का आधार नहीं बनाया जा सकता।

4. जौनसारी जनजाति एवं जौनसार-बावर क्षेत्र

जौनसारी एक मान्यता प्राप्त जनजातीय समुदाय है, जिसकी विशिष्ट सामाजिक, भाषाई एवं धार्मिक परंपराएँ हैं।

जौनसार-बावर क्षेत्र की पहचान मुख्यतः निम्न तत्वों से होती है:

देवता-केंद्रित धार्मिक व्यवस्था

महासू परंपरा

वंशानुगत पुजारी व्यवस्था

देवता लाणा जैसी सामूहिक धार्मिक प्रथाएँ

ये तत्व जौनसारी पहचान के मूल आधार हैं, न कि आधुनिक प्रशासनिक निवास स्थान।

5. माता बल्याणी देवता: उद्गम एवं धार्मिक परंपरा

माता बल्याणी देवता को परंपरागत रूप से चार महासू महाराज की बहन के रूप में पूजा जाता है।

चार महासू महाराज का प्रमुख धाम हनोळ (हनोली) जौनसार-बावर क्षेत्र की धार्मिक चेतना का केंद्र है।

माता बल्याणी देवता का मूल स्थान (मूल स्थान/मूल पीठ) ग्राम प्लासू (अणु) में स्थित माना जाता है।

मौखिक परंपरा एवं अनुष्ठानिक निरंतरता माता बल्याणी की पूजा को महासू परंपरा के समकालीन काल से जोड़ती है।

6. पुजारी वंश एवं भूमि का संबंध

लेखक के पूर्वज प्राचीन काल से माता बल्याणी देवता के परंपरागत पुजारी रहे हैं। यह पुजारी भूमिका वंशानुगत रही है तथा पीढ़ी दर पीढ़ी निर्वाहित होती आई है।

कालांतर में ग्राम थितरोली में भी माता बल्याणी देवता का मंदिर स्थापित हुआ। उस समय क्षेत्र की ठाकुर परिवारों द्वारा उसी वंश को पुजारी दायित्व सौंपा गया, जिससे उनकी धार्मिक मान्यता एवं स्वीकृति सिद्ध होती है।

देवता सेवा के प्रतिफलस्वरूप दोनों ग्रामों में पूजा से संबंधित भूमि का संबंध भी स्थापित हुआ, जो जौनसारी सामाजिक-धार्मिक व्यवस्था की सामान्य विशेषता है।

7. प्लासू (अणु) एवं थितरोली: एक सांस्कृतिक परिक्षेत्र

प्लासू एवं थितरोली के बीच परिवारों का आवागमन भौगोलिक निकटता, विवाह संबंधों, कृषि आवश्यकताओं एवं धार्मिक दायित्वों के कारण स्वाभाविक रहा है।

किसी भी ग्राम में निवास करने से जनजातीय पहचान में परिवर्तन नहीं होता था। कुछ परिवारजन थितरोली में निवास करने लगे, जबकि अन्य प्लासू (अणु) में ही रहते रहे। यह जौनसारी सामाजिक संरचना की पारंपरिक विशेषता है।

8. मानवशास्त्रीय व्याख्या

मानवशास्त्रीय दृष्टिकोण से:

जनजातीय पहचान का निर्धारण संस्कृति, वंश, धार्मिक भूमिका एवं सामूहिक स्मृति से होता है।

वंशानुगत पुजारी व्यवस्था, सतत देवता पूजा एवं भूमि-धार्मिक संबंध सांस्कृतिक निरंतरता के स्पष्ट प्रमाण हैं।

केवल आधुनिक प्रशासनिक सीमाओं के आधार पर पहचान निर्धारण मानवशास्त्रीय सिद्धांतों के अनुरूप नहीं है।

अतः माता बल्याणी देवता से जुड़ा यह वंश आधुनिक राज्य सीमाओं से अप्रभावित जौनसारी पहचान को बनाए रखता है।

9. शैक्षणिक साहित्य से सामंजस्य

जौनसार-बावर पर किए गए मानवशास्त्रीय अध्ययनों में निम्न पहलुओं पर विशेष बल दिया गया है:

महासू परंपरा की केंद्रीय भूमिका

देवता लाणा एवं अनुष्ठानिक प्रक्रियाएँ

वंशानुगत पुजारी व्यवस्था

डॉ. अंजलि चौहान द्वारा लिखित "जौनसारियों में देवता लाणा" जैसे शोध कार्य इन सांस्कृतिक ढाँचों को स्पष्ट रूप से अभिलेखित करते हैं तथा इस टिप्पणी की व्याख्या को समर्थन प्रदान करते हैं।

10. निष्कर्ष

माता बल्याणी देवता, ग्राम प्लासू (अणु) एवं ग्राम थितरोली से संबद्ध यह वंश एक अविच्छिन्न जौनसारी सांस्कृतिक परंपरा का प्रतिनिधित्व करता है, जिसकी जड़ें आधुनिक प्रशासनिक व्यवस्थाओं से पूर्व की हैं।

आधुनिक राज्य सीमाएँ शताब्दियों पुरानी मानवशास्त्रीय वास्तविकताओं को निरस्त नहीं कर सकतीं।

11. संदर्भ

डॉ. अंजलि चौहान (Professor and Head Department of Anthropology Sri Jai Narain PG College University of Lucknow,UP India)– जौनसारियों में देवता लाणा

भारतीय मानवशास्त्रीय सर्वेक्षण – जौनसार-बावर संबंधी प्रकाशन

क्षेत्रीय जनगणना एवं नृवंशशास्त्रीय साहित्य